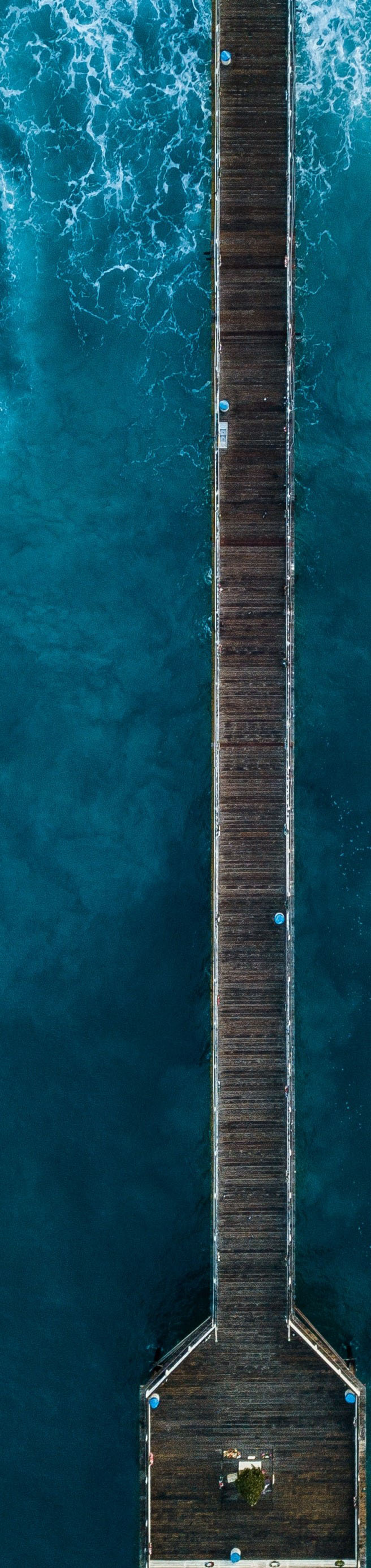

हिंदी में भूमण्डलीकरण का प्रभाव और प्रतिरोध

सूरज पालीवाल

हिन्दी

में

भूमण्डलीकरण

का

प्रभाव और प्रतिरोध

सूरज पालीवाल

डॉ. सूरज पालीवाल

जन्म : मथुरा जिले के गाँव बरौठ में। प्रारंभिक शिक्षा गाँव में तथा उच्च शिक्षा अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़

प्रकाशित कृतियाँ : टीका प्रधान, जंगल (कहानी); फणीश्वरनाथ रेणु का कथा संसार, रचना का सामाजिक आधार, संवाद की तह में, आलोचना के प्रसंग, मैला आंचल : एक विमर्श, साहित्य और इतिहास-दृष्टि, महाभोज का महत्त्व, समकालीन हिन्दी उपन्यास (आलोचना); 'सम्बोधन', 'वर्तमान साहित्य' एवं 'शेष' पत्रिकाओं में नियमित स्तंभ लेखन। अनिवार्य और प्रासंगिक पुस्तकों पर भी नियमित समीक्षा लेखन।

दस वर्षों तक 'वर्तमान साहित्य' के संपादक मंडल में और अब 'इरावती' के संपादक मंडल में।

पुरस्कार : डॉ. अम्बेडकर नेशनल फैलोशिप, प्रेमचन्द पुरस्कार, पंजाब कला एवं साहित्य अकादमी पुरस्कार।

सम्प्रति : पूर्व अध्यक्ष, जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर; निदेशक, प्रौढ़ एवं सतत शिक्षा, जयनारायण व्यास वि.वि., जोधपुर-342011 (राजस्थान)।

संपर्क : 71, सेंट्रल स्कूल स्कीम, जोधपुर

दूरभाष : 0291-2614115, मो. 9414128215

दरअसल, भूमण्डलीकरण, उदारीकरण और उत्तर आधुनिकता एक साथ ऐसे समय आये, जब हमारा देश और विशेष रूप से हिन्दी क्षेत्र सांप्रदायिक ताकतों के निशाने पर था। हिन्दू और मुसलमानों की आपसी फूट और मतभेद उभरकर आ रहे थे, एक-दूसरे के प्रति कटुता और अविश्वास का माहौल बनाया जा चुका था, भूमण्डलीकरण, उदारीकरण और उत्तर-आधुनिकता की घुसपैठ के लिए इससे अच्छा अवसर हो ही नहीं सकता था। विडंबना यह है कि भूमण्डलीकरण जिस बाजारवाद को लेकर आया, उसने समाज के आभिजात्य और उच्च मध्यवर्ग को ही लाभ पहुंचाया। इसी देश में एक ओर अमीर और अमीर होता जा रहा है तो गरीब और अधिक गरीब। यह स्थिति किसी भी देश के लिए सामान्य और साधारण नहीं है। इसलिये हिन्दी के साहित्यकारों ने इस चिन्ता को अपनी रचनाओं का आधार बनाया। कहानी और उपन्यासों में इस दिखते नरक को लेकर बहुत अच्छा लिखा गया है। एक ओर उसके प्रभाव के रूप में बाजारवाद की अंधी दौड़ को रेखांकित किया जा रहा है तो दूसरी ओर उसके दुष्प्रभावों को भी बताया जा रहा है। यह संतोष का विषय है कि हमारे युवा कथाकार इस दिशा में पूरी रचनात्मकता के साथ आ रहे हैं।

इस पुस्तक में संकलित आलेख और समीक्षाएँ इक्कीसवीं शताब्दी के इन्हीं प्रारंभिक वर्षों में लिखी गई हैं, इसलिये इनमें भूमण्डलीकरण के प्रभाव और प्रतिरोध को रेखांकित किया गया है। इन आलेखों के मूल में समाज और उसको रेखांकित करती साहित्यिक कृतियाँ ही हैं, जिन्हें आधुनिक संदर्भों और वृहत् सामाजिक सरोकारों के साथ पढ़ा जाना जरूरी है। बाजारवाद के इस घटाटोप अंधेरे और उदारीकरण के मानवविरोधी समय में हम सब बाजारवाद के शिकार होकर एक जिंस बना दिये गये हैं, हमारी रचना और आलोचना पूरी ताकत से इसके विरोध में खड़ी है-यह दिखाना ही इस पुस्तक का उद्देश्य है।

कथाकार साथी

विभूतिनारायण राय

को

कुछ और

हिन्दी में भूमण्डलीकरण का हौवा खड़ा करने के पीछे कुछ पत्रिकाओं और कुछ बहुत लिखने वाले लेखकों का हाथ है। जिस समाज की बहुत बड़ी आबादी सामंती संस्कारों से मुक्त नहीं हो पाई हो, जिस समाज में तर्क और विवेक को कोई जगह न हो, उस समाज में भूमण्डलीकरण और उसकी जारज संतान उत्तर आधुनिकता की बात करना बेमानी नहीं तो क्या है। पर यह हिन्दी है, यहां सब कुछ चल सकता है। जब जादुई यथार्थ चलाया जा सकता है तब उत्तर आधुनिकता क्यों नहीं। जो इसे चलानेवाले हैं, वे समाज के बौद्धिक वर्ग के हैं, ऐसे बौद्धिक वर्ग के जिन्हें समाज की घनीभूत पीड़ा और चिंताओं से कोई लेना-देना नहीं है। वे ऐसे स्वयंभू हैं कि जो चाहे सो चला सकते हैं और दूर-दराज बैठे पाठक को अपने ज्ञान से अभिभूत कर उसे मानने को बाध्य भी कर सकते हैं।

दरअसल, भूमण्डलीकरण, उदारीकरण और उत्तर आधुनिकता एक साथ ऐसे समय आये, जब हमारा देश और विशेष रूप से हिंदी क्षेत्र सांप्रदायिक ताकतों के निशाने पर था। बाबरी मस्जिद तोड़ी जा चुकी थी, राममंदिर बनाने का एलान किया जा चुका था और देश में उथल-पुथल का वातावरण था। हिन्दू और मुसलमानों की आपसी फूट और मतभेद उभरकर आ रहे थे, एक-दूसरे के प्रति कटुता और अविश्वास का माहौल बनाया जा चुका था, भूमण्डलीकरण, उदारीकरण और उत्तर-आधुनिकता की घुसपैठ के लिए इससे अच्छा अवसर हो ही नहीं सकता था। जब जनता अपनी मुसीबतों और एक-दूसरे से लड़ने में निमग्न हो, तब उसका लाभ उठाना साम्राज्यवादी शक्तियों ने उचित समझा। और देखते-देखते बाजारवाद के रूप में साम्राज्यवाद का डंडा हमारे सिर पर पड़ने लगा। विडम्बना यह है कि भूमण्डलीकरण जिस बाजारवाद को लेकर आया, उसने समाज के आभिजात्य और उच्च मध्यवर्ग को ही लाभ पहुंचाया। अमेरिका जैसे महाप्रतापी देश में भी बीस प्रतिशत उच्च मध्यवर्ग में वृद्धि हुई है लेकिन वहीं मध्यवर्ग के बीस प्रतिशत लोग निम्नमध्यवर्ग में पहुच चुके हैं। बाजारवाद गरीबों के लिए नहीं बल्कि अमीरों की ऐशगाह है।

यह सही है कि भूमण्डलीकरण के बाद लोगों की क्रय शक्ति बढ़ी है लेकिन वे लोग कौन हैं, यह भी जानना जरूरी है। ये वही लोग हैं जो पहले से खाते-पीते परिवारों के थे, जिन्होंने धन और संपर्कों का लाभ उठाकर

रातोंरात और अमीर बनने का सपना साकार किया। इसी देश में एक ओर अमीर और अमीर होता जा रहा है तो गरीब और अधिक गरीब। इसलिए किसान और मजदूरों में आत्महत्या की बढ़ती प्रवृत्ति चिंता का कारण है। गरीबों पर लगातार ऋण बढ़ रहा है, वे अपने दैनंदिन की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए भी ऋण ले रहे हैं, किसान खेती की जरूरी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए ऋण ले रहे हैं और उसे न चुका पाने की स्थिति में आत्महत्या कर रहे हैं। यह स्थिति किसी भी देश के लिए सामान्य और साधारण नहीं है। इसलिये हिन्दी के साहित्यकारों ने इस चिन्ता को अपनी रचनाओं का आधार बनाया। कहानी और उपन्यासों में इस दिखते नरक को लेकर बहुत अच्छा लिखा गया है। एक ओर उसके प्रभाव के रूप में बाजारवाद की अंधी दौड़ को रेखांकित किया जा रहा है तो दूसरी ओर उसके दुष्प्रभावों को भी बताया जा रहा है। यह संतोष का विषय है कि हमारे युवा कथाकार इस दिशा में पूरी रचनात्मकता के साथ आ रहे हैं।

इस पुस्तक में संकलित आलेख और समीक्षाएँ इक्कीसवीं शताब्दी के इन्हीं प्रारंभिक वर्षों में लिखी गई हैं, इसलिये इनमें भूमण्डलीकरण के प्रभाव और प्रतिरोध को रेखांकित किया गया है। मेरी आलोचना के मूल में समाज और उसको रेखांकित करती साहित्यिक कृतियाँ ही हैं, जिन्हें आधुनिक संदर्भों और वृहत् सामाजिक सरोकारों के साथ पढ़ा जाना जरूरी है। मैंने साहित्य को कभी भी जीवन की चिंताओं से अलग करके नहीं देखा इसलिये समकालीन जीवन की चिन्ताएँ और उनको रेखांकित करती कृतियाँ ही मेरी प्रिय रही हैं। यह पुस्तक मेरी इस मान्यता को दृढ़ता से पुष्ट करेगी, ऐसा विश्वास है। बाजारवाद के इस घटाटोप अंधेरे उघैर उदारीकरण के मानवविरोधी समय में हम सब बाजारवाद के शिकार होकर एक जिंस बना दिये गये हैं, हमारी रचना और आलोचना पूरी ताकत से इसके विरोध में खड़ी है-यह दिखाना ही मेरा उद्देश्य है।

'हिन्दी में भूमण्डलीकरण का प्रभाव और प्रतिरोध' पुस्तक के सुरुचिपूर्ण प्रकाशन के लिए मैं ललित शर्मा को धन्यवाद देता हूँ, जिन्होंने इसे बहुत मन से प्रकाशित किया है।

दशहरा, 2007 **-सूरज पालीवाल**

क्रम

हमारे समय के स्त्री-विमर्श का यथार्थ	8
हिन्दी उपन्यासों में भूमण्डलीकरण का प्रभाव एवं प्रतिरोध	20
सत्तरोत्तर हिन्दी उपन्यासों का यथार्थ	33
हिन्दी कहानी के विकास में कथा-पत्रिकाओं का योगदान	44
बीसवीं सदी के उतरार्द्ध के दो दशक और हिन्दी कहानी	52
छायावाद के पुरस्कर्त्ता : मुकुटधर पाण्डेय	66
हिन्दी-उर्दू के सवाल पर राही	72
साझी विरासत और राही का रचना-संसार	77
जातीय एकता का महाआख्यान	85
माफिया राजनीति का जंगल	98
वैचारिक ताप की बेचैनी	113
दो देहियाँ भोगने की जिद	118
परम्परागत परिवार और पत्नी	127
बिधना को ठेंगे पर रखती गदल	134
इसीलिए पढ़िये अपने पुरोधाओं को	142
परिशिष्ट	
सभ्यता समीक्षा का टटकापन	159

हमारे समय के स्त्री विमर्श का यथार्थ

हमारे समय में स्त्री विमर्श पर बात करना ज्यादा आसान है। इसीलिए कि अब चारों ओर स्त्री विमर्श के चर्चे हैं। हर सभा गोष्ठी और पत्र-पत्रिकाओं में स्त्री विमर्श शीर्ष पर है। जो उसके पक्ष में नहीं है वह भी अपने को आगे रखने के चक्कर में उगलती हुई भाषा बोल रहा है और जो पक्ष में है उसे वह अँधियारा दिखाई नहीं दे रहा है, जिसमें आज भी स्त्री की छवि छुपी हुई है। फैशन के रूप में दिक्कत यह है कि हमने स्त्री-विमर्श को अपनाया है, यदि सही अर्थों में अपनाते नो वे आंकड़े भी आते जिनमें यह बताया गया है कि स्त्री की स्वतन्त्रता उसके गले की हड्डी बनती जा रही है। जैसे-जैसे उदारीकरण और भूंमडलीकरण फैल रहा है, वैसे-वैसे ही स्त्री पर अत्याचार और बढ़ते जा रहे हैं। अब वह सजी-धजी गुड़िया की तरह है जिसे बाजार में ले जाकर खड़ा कर दिया है और उसके खरीदने वाले उसके रूप सौन्दर्य और देह-यष्टि को देख रहे हैं। उदारीकरण और भूमण्डलीकरण का आधार बाजारवाद है और बाजारवाद का आधार उपयोगिता है। यानी जो जितना उपयोगी है, वह उतना ही जल्दी बिकेगा। स्त्री हमेशा से ही उपयोगी रही है, इसीलिए वह ज्यादा बिक रही है। हम अपने आस-पास बड़े-बड़े शोरूमों और कोरपोरेट घरानों में देखते हैं कि वहाँ रिसेप्शनिस्ट, निजी सचिव और स्टेनोग्राफर के रूप में सुन्दर युवतियाँ काम कर रही हैं। चाहे कार का विज्ञापन हो या शराब का सबमें स्त्री को ही दिखाया जा रहा है। सवाल यह है कि विज्ञापन अपनी विज्ञापित चीजों के लिए हैं या स्त्री-देह के लिए। सच मायने में पहले बिकने वाली चीज स्त्री-देह ही है। इसीलिए उन दुकानों पर ज्यादा भीड़ होती हैं, जहाँ युवतियाँ माल बेच रही हैं। उदारीकरण से पहले स्त्री-देह के विज्ञापन इस तरह खुले और बेशर्म नहीं हुआ करते थे, एक चीज थी जिसे शर्म कहते हैं, वह विद्यमान रहती थी और उसके लिए कला का प्रयोग किया जाता था। आज कला की जगह फूहड़ विज्ञापनों ने ले ली है और स्त्री उसमें बिक रही है। स्त्री को फूहड़ ढंग से परोसने और बेचने वाला यह समाज इक्कीसवीं शताब्दी का समाज है, जिसमें ज्यादा चर्चा स्त्री-विमर्श पर हो रही है और बावजूद इसके स्त्री अधिक बिक रही है उसका ज्यादा उपभोग किया जा रहा है।

दरअसल, हमने आगे बढ़ने और करोड़पति बनने के चक्कर में उन आकड़ों को भुला दिया, जो हमें स्त्री के लगातार बिकने की खबर देते हैं। भूमण्डलीकरण के इस दौर में स्त्री जिस प्रकार बाजार में बेची जा रही है, उतनी और कोई चीज नहीं, क्या हमने उदारीकरण की दिशा में कदम उठाने से पहले कभी सोचा था कि आर्थिक आधार को मजबूत करने के एबज में स्त्री स्वयं कमजोर होती चली जाएगी। भूमण्डलीकरण के गुणगान करने वालों को जबाव देते हुए सास्किया सासेन ने अपने एक लेख 'वूमेंस बर्डन : काउण्टर ज्योग्राफीज ऑव ग्लोबलाइजेशन एण्ड फेमिनाइजेशन ऑव सरवाइवल' में कहा कि 'सीमाओं के भीतर और उनके आर-पार होने वाली इस तिजारत में श्रम तथा अन्य सेवाओं के लिए औरतों की जबरिया भर्ती की जाती है। इसके लिए अपनाए जाने वाले नाना प्रकार के तरीकों में जोर-दबाव का सहारा लिया जाता है। यह व्यापार औरतों के मानवीय, राजनीतिक और नागरिक अधिकारों का हनन करके सम्पन्न होता है। यह तिजारत मुख्यत: वेश्यावृति, श्रम बाजार और अवैध आव्रजन के लिए की जाती है। यौन उद्योग के लिए औरतों की तिजारत इस व्यापार के कर्ताधर्ताओं के लिए भारी मुनाफे का स्रोत है। संयुक्त राष्ट्र का अनुमान है कि 1998 में चालीस लाख औरतों का निर्यात हुआ जिससे अपराधी गिरोहों ने सात अरब डालर का लाभ कमाया। इस रकम में वेश्याओं द्वारा भेजी जाने वाली रकमें और इस व्यापार आयोजकों और व्यवस्थापकों को किया गया भुगतान भी शामिल है। पिछले कुछ वर्षों से जापान का यौन उद्योग लगभग 4.2 खरब येन प्रति वर्ष कमा रहा है। पोलैंड में पुलिस का अनुमान है कि एक पोलिश औरत का निर्यात करने पर निर्यातकर्ता को सात सौ अमेरिकी डालर मिलते हैं। आस्ट्रेलिया में संघीय पुलिस का अन्दाजा है कि दो सौ औरतों के निर्यात से नौ लाख आस्ट्रेलियाई डालर प्रति सप्ताह की आमदनी होती है। यौन बाजार में उक्रेन और रूस की औरतों की कीमत बहुत ज्यादा है। उनकी तस्करी करके अपराधी गिरोह प्रति औरत पाँच सौ से एक हजार डालर कमा लेते हैं। इन औरतों से अपेक्षा की जाती है कि वे एक दिन में 15 ग्राहकों को सन्तुष्ट करके अपने गिरोह के लिए 21,500 डालर प्रति माह कमायेंगी।' स्त्रियों के इस व्यापार से बड़े व्यापारियों, भर्ती एजेंसियों, बैंकों और एअरलाइनों को जोरदार मुनाफा मिल रहा है। निर्यात करने वाले देश जम कर विदेशी मुद्रा कमा रहे हैं ताकि कर्ज के दबाव से राहत पा सकें और घरेलू मोर्चे पर बेरोजगारी की समस्या थोड़ी-बहुत हल हो सके। औरतों का व्यापार भूमण्डलीकरण के तहत दुनिया भर में शक्ति और समृद्धि का अनुपात